स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
द्वितीय सेमेस्टर 1 दिनांक - 18-5-2020

मधुकर ! हम न होहिं वै बेली।
जिनको तुम तजि भजत प्रीति बिनु करत कुसुमरस-केली।।
बारे ते बलबीर बढ़ाई पोसी प्याई पानी।
बिनु पिय-परस प्रात उठि फूलत होत सदा हित-हानी।।
ये बल्ली बिहरत बृन्दावन अरुझी स्याम-तमालहिं।
प्रेमपुष्प-रस-बास हमारे बिलसत मधुप गोपालहिं।।
जोग-समीर धीर नहिं डोलत, रूपडार ढिंग लागी।
सूर पराग न तजत हिये तें कमल-नयन अनुरागी।।

व्याख्या :- विद्यार्थियो आज जिस पद पर विचार करने जा रहे है वह सिलेबस में वर्णित पदों में से संग्रह में आखिर है क्योंकि अगला पद -200 से ऊपर का है जबकि संग्रह में मात्र यहीं तक है। अतः - 210, 211, 366, 384 और 400 संख्या वाले पदों की पढ़ाई संभव नहीं है।

इस पद में गोपियाँ अपने अनन्य प्रेम के बारे में कहती हैं। वे कहती हैं कि हे! मधुकर, हे! भँवरे हम वह बेली, वह लता है जिनको छोड़कर तुम चले जाएँगे और दूसरा भ्रमर आएगा और वह भी रस चूस लेगा।

गोपियों का कहना है कि वैसी कली, वैसी लता नहीं है जिसे माली लगाकर फिर पलट जाए और दूसरी लता पर रसकेलि करने लगे और हम वह देखते रहें और चुप रहें।

इनका कहना है कि बालपन से हम लोगों को उस छलिया कृष्ण का प्रेम मिलता रहा है। एक माली की तरह उसने हमारे प्रेम की लताओं को पोसा, पाला और प्रेमरस रूपी जल से सींचा है। जो पुष्प लताएँ एक की आदी हो गयी वे दूसरे के स्पर्श से खिल जाती हैं उनकी सदा हित हानि होती है यह निश्चित है। वे निश्चित रूप से कहती हैं कि वे कृष्ण रूपी तमाल वृक्ष में लिपट कर आश्वस्त हो गयी थीं। हम में हमेशा प्रेम रूपी रस में डूबी रहती हैं जो कृष्ण का है। गोपियाँ कहती हैं कि योग रूपी हवा का झोंका हमारे चोटि को डिगा नहीं सकता है क्योंकि यह कृष्ण के रूप की डाल में लिपटा हुआ है।

सूरदास जी कहते हैं कि गोपियाँ निश्चित रूप से कहती हैं गोपियों के हृदय प्रेम पराग अंतर तक बस गया है। कोई लाख प्रयास करें

लो गोपियाँ उस प्रेम पराग को त्यागना ही नहीं चाहतीं क्योंकि वे कमलनयन श्रीकृष्ण के अनुराग में, प्रेम में डूब गयी हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि इस पद में गोपियों का जो दृढ़ प्रेम दिखाई पड़ता है। वह सच्ची साधिका है, उद्धव की चंचल वृत्ति को इसमें निरूपित किया गया है। इनमें तो न विचारों की स्थिरता है और न ही एकात्मकता। गोपियों का प्रेम एक पवित्र प्रेम है।

इस पद में प्रारम्भ से ही जो रूपक बाँधा गया है जो बताया गया है कि वो बेली बोली नहीं हैं। अंत तक इस कथन का निर्वाह किया गया है अतः इसमें सांग रूपक है। बल्ली बिहरन में, श्याम-तमालहिं में प्रेम पुष्प रस बास, जोग-समीर, रूप-डार सर्वत्र रूपक अलंकार की छटा देखने को मिलती है। रूपक के साथ ही इसमें रूपकातिशयोक्ति और अन्योक्ति अलंकार भी। ये बल्ली बिहरत वृन्दावन में रूपकातिशयोक्ति की झलक मिलती है। भ्रम और

4

लताओं में आरोपित अलंकार का सौंदर्य मिलता है

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रथम क्रम के सभी पदों में गोपियों का कामना दिखाई पड़ता है क्यों। उनका आनन्द प्रेम तथा उनके आगे उद्धव जी के योग की पराजय दिखाई पाती है। इस तरह पदों का पाठ स्थगित होता है। एक दो प्रश्नोत्तर पहले भी लिखवा चुके हैं आगे भी लिखवा देंगे। फिर अगली किताब की चर्चा करेंगे। धन्यवाद:

कुमार रजनीकान्त रंजन

२८/५/२०२०